‘साहित्य–गङ्गाधर’ का रचना कौशल एवं चारुत्व विवेचन

डॉ. बलवन्त सिंह चौहान
सह आचार्य (संस्कृत)
डॉ. बी.आर.ए. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

शोध–सारांश –

संस्कृत के महामनीषी ऋषिकल्प विद्वत्वरेण्य डॉ. गङ्गाधर भट्ट उन महानुभावों में परिगणित हैं, जिनका वैदुष्य, व्यवहार–पटुता, शास्त्रीय विनोद और ऋजुता संस्कृत जगत् में सुज्ञात है। राजस्थान संस्कृत अकादमी से ‘साहित्य–गङ्गाधर’ शीर्षक से आपके पाण्डित्यपूर्ण इक्कीस शोध निबन्धों का पुस्तक रूप में वर्ष 2006 में प्रकाशन हुआ। साहित्य–गङ्गाधर’ नामक ग्रंथ में छः निबन्ध कविवर कालिदास के नव–नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के विविध आयामों के प्रकाशनार्थ लिखे गये हैं। इन निबन्धों में कविपुंगव कालिदास की कवित्वशक्ति, राष्ट्रभक्ति, भारतीय संस्कृति तथा नारी गरिमा के आदर्श रूपों का तटस्थ किन्तु गम्भीर अनुशीलन किया गया है। इसी प्रकार संस्कृत भाषा के स्वरूप और आज के परिवेश में उसकी अनिवार्यता का विवेचन करने वाले आठ मौलिक शोध निबन्ध हैं। आपके इस निबन्ध संग्रह के गौरव के परिचायक निस्संदेह इन निबन्धों में संस्कृत भाषा के कमनीय, माङ्गलिक एवम् उदात्त पक्षों को बहुशः निरूपित किया गया है। आलोच्य ग्रंथसंग्रह में वर्णित तीन निबन्ध महाकवि माघ की सर्वतोमुखी प्रतिभा की विलक्षणता के द्योतक बतलाये गये हैं। इनके अतिरिक्त अन्य भी अनेक विषयों का विवेचन परिमार्जित भाषा में सुष्ठुत्व किया गया है। आधुनिक संस्कृत साहित्य की समीक्षा में प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र की प्रासङ्गिकता को लेकर सार्थक संवाद संस्कृत के नव समीक्षकों के लिए मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। संस्कृत गद्य लेखन यथार्थतः कवित्व की निस्संदेह क्लिष्ट कसौटी है। डॉ. भट्ट ने ‘साहित्य–गङ्गाधर’ में संकलित इन निबन्धों के माध्यम से साहित्य के गम्भीर पक्षों को बड़े पैनेपन के साथ सरलता से प्रस्तुत किया है। वर्ण्य–विषय तथा संस्कृत भाषा पर निस्संदेह आपका असाधारण अधिकार है।

शोध उद्देश्य –

1. शोध निबन्धों की तटस्थ शास्त्रीय पर्यालोचना करना है।
2. विभिन्न चरित्रों के वैशिष्ट्य के माध्यम से जीवन के उच्च मूल्यपरक तथ्यों को उजागर करना।
3. राष्ट्रीय अस्मिता और एकता को सम्पुष्ट करने वाले पक्ष को प्रस्तुत करना।
4. संस्कृत शोधार्थियों और पाठकों को एक नवीन दृष्टि प्रदान करना।
5. संस्कृत भाषा की नवीन कृतियों से संस्कृत अध्येताओं को परिचित करवाकर लोक–व्यवहार का ज्ञान करवाना।
6. युवावर्ग को भोगवादी संस्कृति के विरुद्ध त्याग व तपोमय जीने हेतु प्रेरित करना।
7. संस्कृत भाषा के प्रति पाठकों को आकर्षित कर उनमें मानवीय व नैतिक मूल्यों का संचार करना।
8. साहित्य की विधा ‘निबन्ध’ के तात्विक पक्षों से शोधार्थियों और अध्येताओं को अवगत करवाना।

मुख्य बिन्दु : लोकविश्रुता, प्रजाजनवत्सला, वैदुष्यनिकष, चन्द्रमूर्तेः, वैलक्षण्यं, विद्या प्रशंसा सिद्धगणाः, सत्यानुभूति, चेतनालीनः, साधारणीकरण।

वर्ण्य विषय –

सुधीनिबन्धकार गङ्गाधर भट्ट ने आलोच्य निबन्धसंग्रह में कविवर कालिदास से सम्बद्ध छः निबन्ध लिखे हैं। प्रायः इन निबन्धों में विभिन्न चरित्रों के वैशिष्ट्य के माध्यम से जीवन के उच्च मूल्यपरक तथ्यों को आपने बहुशः उजागर करने

ISSN 2349-638x

का स्तुत्य प्रयास किया है। 'इयं हि कालिदासस्य रम्या चारित्रपद्धतिः' इस शोध निबन्ध में आपने सुललित एवं प्रवाहपूर्ण संस्कृत भाषा में कालिदास की विभिन्न कृतियों के चरित्राङ्कन में पति, पत्नी, पिता, पुत्र, भ्राता, सुहृद प्रभृति सामाजिक सम्बन्धों के कर्तव्यनिष्ठापरक आदर्शों की सुस्थापना की है। कविकुलगुरु कालिदास के प्रबन्धों में जहाँ तक नायिकाओं के चयन का प्रश्न है, उनमें अद्वितीय सौन्दर्य सम्पन्न नायिकाओं को आपने प्रमुखता दी है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की नायिका शकुन्तला व स्वर्गलोक की अप्सरा उर्वशी अनिन्द्य सुन्दर कन्याएँ थी। इसी प्रकार 'रघुवंश' महाकाव्य में श्रीराम की भार्या 'सीता', महाराज अज की पत्नी इन्दुमती अपने उदात्त सौन्दर्य के प्रतिमान थे। 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में मालविका का सौन्दर्य भी शीर्षस्थ स्थानीय चित्रित हुआ है। एवमेव 'कुमारसम्भव' में पार्वती का सौन्दर्य पराकाष्ठा पर चित्रित किया गया है। निबन्धकार प्रो. भट्ट ने इन पात्रों के सौन्दर्य के विषय में अत्यंत प्रभावपूर्ण पंक्ति इस प्रकार लिखी हैं– 'ब्रह्मा जगतः समग्रमपि रूपलावण्यमेकत्र विनिवेशितवान्। अतः औपम्यार्थं समेषामपि जागतिकानां वस्तूनामेकत्रावस्थितिरेकस्य सौन्दर्यदिदृक्षया विधात्रा विहिता –

सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथा प्रदेशं विनिवेशितेन।
सा निर्मिता विश्वसृजा प्रयत्नादेकस्य
सौन्दर्यदिदृक्षयेव।।[1]

वस्तुतः कालिदास बाह्यरूप सौन्दर्य के साथ–साथ निष्कपट शीलसम्पन्न सौन्दर्य के चित्रण में अधिक कृत्कार्य हुए हैं। जो सौन्दर्य पापवृत्ति को संवर्धित करने वाला न हो वस्तुतः वही सौन्दर्य श्लाघ्य माना जा सकता है। 'कुमारसम्भव' में देवी पार्वती का अनुपम लावण्य कुछ इसी रूप में चित्रित हुआ है, जिसे निबन्धकार प्रो. भट्ट ने प्रभावी रूप में इस प्रकार वर्णित किया है– 'अविकलतपश्चर्यायानिरतामुद्दिश्य ब्रह्मचारिवेशधारिणः शिवस्येयमुक्तिः स्वयं प्रथयति– 'यदुच्यते पार्वति पापवृत्तये, न रूपमित्यव्यभिचारी तद्वचः।। शिव उद्युङ्क्ते–पार्वति! रूपसौन्दर्यं पापवृत्तये न भवतीति यदुच्यते तद्वचः सत्यमेव प्रतिभाति। यद्रूपं पापवृत्तिं प्रेरयति न तद् वास्तविकं रूपम्। यद्रूपं पापवृत्तिं वर्धयति तत्र सत्त्वोद्रेकस्य सामर्थ्यराहित्यम्। न तत् सौन्दर्यकोटौ समाविष्टं जायते। अग्रे च शिवो विशिनष्टि यत् तस्याः पापवृत्तिविनिर्मुक्तं, निष्कलुषमुदारं शीलमवलोक्य महान्तः तपस्विनोऽप्युपदेशं गृहणन्ति।'[2] निबन्धकार मनीषी श्रीभट्ट ने बड़े ओजस्वी स्वर में पति का सर्वस्वभूत साध्वी स्त्रियों को निरूपित किया है।

'साध्वीस्त्रियः पत्युः सर्वस्वं भवन्ति। सा निजप्रियतमस्य पत्नी, मित्रं, मन्त्री, ललितकलासु तस्य प्रियशिष्या सर्वदैव तस्य च सहधर्मिणी – किं किं सा न वर्तते। प्रियाविरहितस्य जगच्छून्यारण्यमिव प्रतीयते। क्षमाशीलतायाः वरदानं विधाय विधात्रा नार्यः गौरवातिशयेन मण्डिताः, सत्यः परहितचिन्तनमेव नैजमपूर्वं लक्ष्यं मन्वते। रामेण निष्कारणं परित्यक्तायाः सीतायाः स्वान्ते कियान् नैसर्गिकः प्रेमा राराजते इति गर्भभरालसायास्तस्याः कथनेनानेन सुस्पष्टं जाजायते।।'[3]

कालिदास के काव्यग्रन्थों में नायक के रूप में दिलीप, रघु, अज, दशरथ, रामादि रघुवंशीय राजाओं का लोकविश्रुत पराक्रम चित्रित किया है। इसी प्रकार 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के नायक 'दुष्यन्त' तथा 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक के नायक पुरुरवा अत्यन्त वीर और प्रजावत्सल के रूप में चित्रित किये गये हैं। इस तथ्य का सुन्दर प्रतिपादन श्रीभट्ट ने अपने निबन्ध में इस प्रकार किया है – 'कालिदासस्य काव्यग्रंथानां नायकेषु दिलीप–रघु–अज–दशरथ–रामादयो रघुवंशीया राजानः लोकविश्रुताः प्रख्यातपराक्रमिण इत्यत्र नास्ति संशीतिलेशः। अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायको दुष्यन्तः विक्रमोर्वशीयं नाम्नो नाटकस्य पुरुरवा निरतिशयितौ वीराग्रण्यौ, इन्द्रोऽपि स्वकीयशत्रूणामपक्षयार्थमनयोः शरणमेति। प्रजाजनवत्सला इमे प्रजारञ्जनमेव स्वव्रतं मन्वते स्मः सत्स्वपि अप्रतिहतपराक्रमेषु, अनुपमानाङ्गलावण्यवत्सु ते राजानः स्वचरित्ररक्षया

दृढ़तमा यत्ते मनसापि परकीयां नारीं न कामयन्ते स्म।'[4]

इसी प्रकार महाराज राम का एक पत्नीव्रत स्तुत्य है। सीतापरित्याग के पश्चात् भी श्रीराम एक पत्नीव्रत परायण ही चित्रित किये गये हैं। 'शाकुन्तल' में महाराज दुष्यन्त भी शकुन्तला को देखकर कहते हैं– 'दुष्यन्तः शाकुन्तले नाटके शकुन्तलामवलोक्य वक्ति 'अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति। स स्वमनोभावान् व्यनक्ति यद् वशिनो जनाः कदापि परपरिग्रहो न कामयन्ते। तेषां मनस्यपि पराङ्गनाश्लेषाभिलाषो न जायते–

कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति पङ्कजान्येव।
वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेषपराङ्मुखी वृत्तिः।।

चन्द्रः केवलं कुमुदान्येव विकासयति सूर्योऽपि पङ्कजान्येव प्रकाशयति वशिनोऽपि तथैवात्मपरिग्रहसन्तुष्टाः। जितेन्द्रियाः परकीयां जायां स्प्रष्टुमपि न ईहन्ते। दुष्यन्तस्य कथनमिदं तस्य चारित्रिकोदात्तताया ऊर्जस्वितायाश्च परिचायकम्। रागात्मिक्यामवस्थायामपि दुष्यन्तो यदा मनसैव निश्चिनोति यदियं क्षत्रियपरिग्रहक्षमा वर्तते यतो हि तस्यार्थं गुणशीलसम्पन्नं मनस्तां कामयते।'[5]

श्रीभट्ट जी ने नारी चित्रण के सन्दर्भ में शकुन्तला सहित पार्वती, मालविका और सीता के चारित्रिक वैशिष्ट्यों को बहुशः निरूपित किया है। 'महाकवेः कालिदासस्यानुपमा कृतिः मालविका' शीर्षक वाले निबन्ध में मालविका के चरित्र के अनेक धवल पक्षों को अत्यन्त लालित्यपूर्वक ढंग से प्रस्तुत किया है। मालविका चारुतायाः सुरम्यामूर्तिः सहैव भावप्रवणा अपूर्वस्नेहस्य च साकारा प्रतिमा अविद्यत। तस्याः अन्तःकरणं प्रणयसम्वेदनानामक्षुण्णः आगारः। प्रमदवने अग्निमित्रेण सह साक्षात्करणानन्तरं राजानं प्रति वर्धमाना प्रणयासक्तिः तस्या प्रणयिहृदयस्य अतीव रम्यं मनोहारि च चित्रं प्रस्तौति।'[6]

'साहित्य–गङ्गाधर' इस निबन्ध संग्रह में संस्कृत साहित्य की अनेक विशेषताओं का वर्ण्य–विषय के रूप में निबन्धकार ने चयन किया है। जैसे 'राष्ट्रियैकता संस्कृतसाहित्यञ्च'। इस निबन्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण संदर्भों के साथ राष्ट्रिय अस्मिता और एकता को सम्पुष्ट करने वाले पक्षों को सुन्दर रीति से प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार 'संस्कृतसाहित्यस्य युगीनत्वम्', 'संस्कृत–शिक्षणं कथं प्रभविष्णु भवेत्', 'सप्तमदशकीयं संस्कृतसाहित्यम्' प्रभृति निबन्धों में संस्कृत साहित्य के अनेक महनीय पक्षों को लालित्यपूर्ण और सरल रीति से निबन्धकार ने प्रस्तुत किया है। आचार्य भट्ट जी ने 'राजस्थान–प्रदेशे संस्कृतविषयकमनुसन्धानम्' शीर्षक वाले निबन्ध में संस्कृत में हो रहे अनुसंधान कार्यों का तलावगाही विवरण प्रस्तुत किया है। साथ ही 'अनुसंधान की दशा और दिशा' पर भी प्रकाश डाला है। जैसे – राजस्थान विश्वविद्यालयस्य स्थापनान्तरमद्यावधि भूयांसः शोध–प्रबन्धाः परीक्षणार्थं प्रस्तुताः। स्वीकृतेषु शोधप्रबन्धेषु साहित्यविषयमधिकृत्य विहितानां शोधानां संख्या समधिका। साहित्यानुसन्धानानन्तरं वैदिकविषयाणामध्ययनं विशिष्टं स्थानं लभते। विभागेऽमुष्मिन् वैदिकं गम्भीरमध्ययनमनुसन्धानञ्च व्यधीयत।[7]

शोध के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन हेतु आपने इस निबन्ध में जो दृष्टि प्रदान की है, वह निस्संदेह शोध की दिशा को सँवारने में मील का पत्थर साबित हुई है। 'अत्र विद्वज्जनपुरतः केचन उपायाः वर्तन्ते येषामनुसरणेन शोधस्य स्तरः समेधिष्यते वास्तविकज्ञानस्य विकासोऽभिवृद्धिश्च सम्पत्स्यते। तत्रादौ अवश्यकरणीयत्वेनावश्यकं यत् शोधनिर्देशिकाः शोधोपाधिसम्वलिताः स्वयं शोधनिरताः भवेयुः। तेषां विशिष्टं वैदुष्यं शोधनिर्देशकस्वीकृतिनियामकं कल्पेत। केवलं वैदुष्यनिकष एव तेषां मूल्याङ्कनं भवेत्। प्रोत्साहनरूपेण शोधनिर्देशकेभ्यः पुरस्काराः प्रदेयाः। शोधकार्यस्य पृथक्तः मूल्याङ्कनं विधेयम्। विभागेषु शोधप्रकोष्ठस्य स्थापना नितरामावश्यकी। शोधनिर्देशकानां कृते पृथक्कक्षाणां व्यवस्था भवेत्,

येन ते तत्र स्वशोधच्छात्राणां साहाय्यं विदध्युः। तत्र ते नैजमपि शोधकार्यं कर्तुं प्रभवेयुः। शोधनिर्देशिकाः पुरस्काररूपेण प्रशंसापत्राणि, पदोन्नतयश्च लभेरन्।'[8]

आधुनिक–संस्कृतसाहित्य–समीक्षायां

प्राचीन–काव्यशास्त्रस्य प्रासङ्गिकता' तथा 'सत्यानुभूति–सिद्धान्तस्तत् स्वरूपञ्च' इन शोध निबन्धों के माध्यम से अभिनव संस्कृत रचनाओं के समीक्षण हेतु अत्यन्त उपादेय मार्गदर्शन किया है। वर्ण्य–विषय के रूप में आपने कालिदास के अतिरिक्त महाकवि माघ की विशेषताओं या विलक्षणता के प्रतिपादन में 'वैलक्षण्यं हि माघस्य लालित्यं पदविस्तरे', नवसर्ग–गते माघे नवशब्दो न विद्यते, माघस्य सर्वतो मुखं पाण्डित्यम्' आदि शोध आलेखों के माध्यम से विविध दृष्टान्तों के आलोक में महाकवि माघ के लालित्य, प्रौढ़ साहित्य और कवित्व के अत्यन्त श्लाघ्य पक्षों को भली प्रकार प्रस्तुत किया है। 'संस्कृत शिक्षण को कैसे प्रभावी बनाया जावे?' इस विषय में 'संस्कृतशिक्षणं कथं प्रभविष्णु भवेत्' 'शिक्षायाः स्वरूप परम्परा च' इन दो निबन्धों के माध्यम से बहुत सार्थक चर्चा की है। इस प्रकार स्व. प्रो. गङ्गाधर भट्ट जी ने अपने शोध निबन्धों में आज के संदर्भ में जो नितान्त उपादेय है और जिनसे संस्कृत और संस्कृत के छात्रों को एक नवीन दृष्टि मिल सकती है। ऐसे वर्ण्य–विषयों का चयन कर अपनी धारदार लेखनी का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत किया है।

भाषा सौष्ठव –

कहना न होगा कि विषय एवं भाव सम्प्रेषण में प्रवाहपूर्ण लालित्य संवलित एवं विषयानुरूप भाषिक–विन्यास का महत्त्वपूर्ण योगदान हुआ करता है। दुरूह से दुरूह विषयों को भाषा के सशक्त शिल्प–विधान से हृत् एवं प्रभावीरूप में वर्ण्य–विषय को चारुतया उपस्थापित किया जा सकता है।

यहाँ उपस्थित विद्वत्समुदाय से यह तथ्य तिरोहित नहीं है कि स्वनामधन्य डॉ. गङ्गाधर भट्ट का संस्कृत भाषा और गूढ़ व्याकरण दर्शन, साहित्य प्रभृति शास्त्रीय विषयों पर असाधारण अधिकार था और विषय उपस्थापन मनोरञ्जनात्मक शैली का आश्रय लेकर कैसे बड़ी से बड़ी बात को सहजता से कहा जा सकता है। कदाचित् इस युग में भट्ट जी जैसे सशक्त दृष्टान्त कम ही दृष्टिगत होते हैं। यहाँ मैं कतिपय वर्णात्मक भाषा, शास्त्रीय भाषा, प्रवाहपूर्ण भाषा एवं लालित्यपूर्ण शब्द–विन्यास के कतिपय उदाहरण 'साहित्य–गङ्गाधर' में संकलित निबन्धों से उद्धृत करना चाहूँगा, जिससे उनके भाषा–सौष्ठव की प्रवीणता पर समुचित प्रकाश पड़ सके। 'राष्ट्रियैकता संस्कृतसाहित्यञ्च' निबन्ध में सोमनाथ और चन्द्रनाथ मन्दिर के प्रसंग में प्रासादिक शैली का रमणीय प्रयोग किया गया है– 'सूर्यः प्रत्यक्षदेवत्वेनाद्रीयते। शिवस्य चन्द्रमूर्तेः प्रतिष्ठा भारते स्थानद्वये सन्दृश्यते। एकतः भारतस्य पश्चिमदिग्भागे काठियावाडस्य सुप्रथितं सोमनाथमन्दिरमपरतः देशस्यास्य पूर्वस्मिन् प्रदेशे बङ्गप्रान्ते चन्द्रनाथक्षेत्रम्। सोमनाथस्य प्रथितं मन्दिरं प्रभासक्षेत्रे शोशुभ्यतेऽथ च चन्द्रनाथस्य प्रख्यातं मन्दिरं चटगाँवतः विंशतिक्रोशमुत्तरेपूर्वे पर्वतशिखरोपरि वेविद्यते। शिवस्य यजमानरूपां मूर्तिनेपालक्षेत्रे पशुपतिनाथाख्यया सुप्रसिद्धं तीर्थक्षेत्रं राराज्यते।'[9]

वहीं प्रो. भट्ट शास्त्रीय भाषा के प्रयोग में भी सिद्धहस्त हैं। 'बाणभट्टस्य कृतिषु कालिदासप्रभावस्य मूल्याङ्कनम्' निबन्ध में शास्त्रीय भाषा का मनोहारी प्रयोग द्रष्टव्य है– 'महाश्वेताभिधानं च गौर्याः पर्यायेण प्रतिपादकमिति विचारसरण्याममुमेवार्थं प्रकटीकरोति यत् बाणभट्टस्यावचेतने चेतोभागे कुमारसम्भवादि काव्यान्तर्गतानां विविधवस्तूनां प्रतिबिम्बं व्यराजत एवं तदैव स्वीयायां रचनायां समुन्मीलितं वर्तते। महाश्वेतायास्तपोवर्णने शिवं पतिरूपेण प्राप्तुं तपस्यन्ती गौरीव प्रतिबिम्बिता भवति। 'कुमारसम्भवे' तपस्यन्त्याः गौर्याः यादृशं चित्रणं विहितं तस्य बाहुल्येन साम्यं महाश्वेतायास्तपश्चर्यायाः वर्णने समुपलभ्यते। कालिदासेन कुमारसम्भवे यथाप्रसिद्धैर्मधुरं शिरोरुहैर्जटाभिरप्येवमभूत्तदाननम्।'[10]

जहाँ तक कविवर द्वारा प्रयुक्त व्याकरणात्मक भाषा का प्रयोग है, वह भी देखते ही बनता है। व्याकरणात्मक भाषा का एक मनोहारी उदाहरण 'शिक्षायाः स्वरूपं परम्परा च' निबन्ध में इस प्रकार मिलता है– 'इन्द्रशत्रु स्वरतोऽपराधादिति। इन्द्रशत्रुर्वधस्वेत्यादौ बहुव्रीहिस्तत्पुरुषो वेति सन्देहे पूर्वपद प्रकृतिस्वरेण बहुव्रीहि समास इति व्याकरणेन सिध्यति। अत्रेयमाख्यायिका सुप्रथिता वेविद्यते। पुरा किल त्वष्टुः ब्राह्मणः पुत्रम् इन्द्रेण निहते विश्वरूप वधात्प्रकुपितेन त्वष्ट्रा समारब्धे वीन्द्रे सोमेऽनपहूतेनैव इन्द्रेण पीतस्य सोमस्यावशेषं दृष्ट्वा क्रुद्धस्त्वष्ट्रा इन्द्रस्य हन्तुर्वृत्रनामकस्य पुत्रस्योत्पादनायाभिचारिकं यियक्षमाण आहवनीयमुपप्रावर्तयदाह च इन्द्रो शत्रुर्वर्धस्वेति। ततो वृत्रासुर उदभूदिति श्रूयते तैत्तिरीय संहितायाम्। तदेतच्छ्रुत्वा भीतिभीत इन्द्रो ब्रह्मलोकं गत्वा सरस्वतीं तुष्टाव। तत इन्द्रे सानुकम्पया सरस्वत्या त्वष्टुः मुखादन्तोदात्ते इन्द्र शब्दे प्रयोक्तव्ये तद्वैपरीत्येन पूर्वपदप्रकृति स्वरवत् इन्द्रःशातयिता यस्येत्यर्थकमिन्द्रशत्रु पदम् उच्चारितम्। परिणामतः उत्पन्नो वृत्रः इन्द्रेण हत इति स्पष्टम्।'[11] वहीं प्रो. भट्ट लालित्य एवं प्रवाह का सुन्दर सामञ्जस्य करने में भी सिद्धहस्त हैं। 'महाकवेः कालिदासस्य राष्ट्राधनसरणिः' निबन्ध का एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा–

आमेखलं सञ्चरतां घनानां छायामधः
सानुमतां निषेव्य।
उद्वेजिता वृष्टिमिराश्रयन्ते शृंगाणि यस्या
तपवन्ति सिद्धाः।।

'श्लोकस्यास्यामभिप्रायो यद् हिमालयोत्तरशिखरेषु निवसन्तः सिद्धगणाः शिखराणां मध्यभागे सर्वतः प्रसरणशीलानां व्याप्तसकलदिग्दिगन्तराणां मेघमण्डलानामधस्तात् शिलासु निपतन्तीं छायां सेवमाना दृश्यन्ते। तदनन्तरं मेघवृष्ट्याऽऽकुलिताः सन्त आतपवन्ति हिमाद्रेः शृङगाण्याश्रयन्ते। श्लोकेऽमुष्मिन् हिमालयस्यात्यन्तं मनोहारि चित्र समुपस्थापितं कविनाऽमुना कालिदासेनेति निर्विवादम्।'[12]

प्रतिपादन कौशल –

मनीषीवर्य डॉ. भट्ट जी अपनी सरल, स्पष्ट एवं बेबाक प्रतिपादन शैली के लिए संस्कृत जगत् में सुख्यात रहे हैं। दीर्घ से भी दीर्घ कथन को बहुत स्पष्टता, सरलता और बिना किसी उलझन के प्रस्तुत करने की कला में आप सिद्धहस्त रहे हैं। आपके निबन्धों में विवेच्य विषय की जटिलता कितनी भी हो, किन्तु प्रतिपादन की स्पष्ट शैली के कारण दुरूह विषय भी सर्वगम्य हो जाते थे। आपके प्रतिपादन में शास्त्रीय पुट होने पर भी अकृत्रिम शैली का सर्वत्र वर्चस्व पाया जाता है। शब्दों का गुम्फन सुमधुर होने के साथ–ही–साथ आपकी भाषा में सामासिकता का अत्यन्त प्रयोग सहज ही आपको संवाद में प्रवीणता प्रदान करता है। जिस विषय को आप कहना चाहते हैं, वह कथ्य सदा ही एक सहज प्रवाह में अग्रसर होता प्रतीत होता है। यहाँ एक उदाहरण उनके प्रतिपादन कौशल के प्रमाणस्वरूप 'रघुकारः कालिदासः' शीर्षक वाले निबन्ध से प्रस्तुत करना चाहूँगा– 'प्रायः समेषामपि रसानां सुरम्य परिपाकः काव्येऽस्मिन् दृश्यते। अग्निवर्णस्य विलासवर्णने शृङगाररस्य, रघु–अज–रामादिराज्ञां युद्धवर्णने वीररसस्य, अजविलापे करुणरसस्य, वसिष्ठ–वाल्मीकि आश्रमेषु, सर्वस्व त्यागिनः रघोः वर्णने शान्तरसस्य सुरम्याऽभिव्यक्तिः अनायासेन द्रष्टुं शक्यते। अलंकाराणां समुचितः प्रयोगः दृश्यस्य भावस्य वा रामणीयकतां प्रवर्धयति।'[13]

जहाँ साधारणतया लोग वर्ण्य–विषय की क्लिष्टता के कारण दुरूह भाषिक प्रयोग में संलग्न रहते हैं, वहीं डा. भट्ट अपने कथन को सुस्पष्टता, प्रौढ़ता और सर्वगम्यता से कैसे उपस्थापित करते हैं, यह तथ्य निम्नांकित उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है– 'आध्यात्मिकानुभूत्यां सत्यानुभूतेर्विद्यमानताऽऽस्ते। आध्यात्मिक सत्यस्यानुभूतिश्चेतनाया उत्कर्षस्य चरमावस्थितिः यत्र चाध्यात्मिकतत्त्वानां विषयरूपे उपस्थितिर्जायते। आध्यात्मिकानुभूत्यां मानव ऐन्द्रियविकारैर्नितान्तं विर्निमुक्तं एकमात्र चेतनालीनो वर्वर्ति। अतोऽत्र चेतनागतस्वरूपोन्मुखताया

प्राधान्यम्। काव्यगतसत्यानुभूत्यां चेतनागतस्वरूपोन्मुखतायां विद्यमानतायामपि तस्या अप्राधान्यं दृश्यते। अत्र अप्रधानैषा चेतनागतस्वरूपोन्मुखता लोकसंवादरूपसत्यस्य सूक्ष्मतामाध्यमेन समुत्पद्यते।'[14] डॉ. भट्ट की लेखनी में प्राचीन संस्कृत कवियों की भाँति शास्त्रीय पाण्डित्य प्रदर्शन करने की स्वल्प भी प्रवृत्ति दृष्टिगत नहीं होती, अपितु विवेच्य विषय का यथासाध्य सुगम प्रणाली से भाव–सम्प्रेषण इनका प्रधान लक्ष्य प्रतीत होता है। 'सप्तमदशकीयं संस्कृतसाहित्यम्' शीर्षक वाले निबन्ध का एक दृष्टान्त इनकी प्रतिपादन पटुता का रमणीय निदर्शन है। 'प्रियदर्शिनीमिन्दिरामभिलक्ष्य बहूनि काव्यरत्नानि लिखितानि तस्या महिमानमुद्बोधयन्ति। कठोपनिषदीयां यमनचिकेतसोः कथामभिलक्ष्य विरचिता महाकाव्यद्वयी वर्तते तयोरेकं महाकाव्यं 'अमृतमन्थनम्' नव–सर्गेषु स्वयं प्रकाशशास्त्रिणा व्यरचि। अपरञ्च 'नचिकेता' नामकं महाकाव्यं अष्टाविंशति सर्गात्मकं श्रीकृष्णप्रसादशर्मणा लिखितम्। द्वाभ्यामपि कविभ्यां मूलेतिवृत्ति किमपि नव्यं भव्यं च समुपस्थापितम्।[15]

निष्कर्ष –

इस प्रकार प्रो. गंगाधर भट्टजी ने इस आलोच्य निबन्ध संकलन ग्रन्थ 'साहित्यगङ्गाधर' में अधिकतर गम्भीर विषयों को ही स्पर्श किया है। यदि यह कहा जाये तो यह अत्युक्ति नहीं होगी कि विषय चाहे जितना सरल हो या दुरूह, इनके चिन्तन और विषयवस्तु के उपस्थापन में सर्वत्र गाम्भीर्य परिलक्षित होता है। यह कहना कदाचित् ज्यादा सटीक होगा कि प्रत्येक वर्ण्य विषय के उपस्थापन में कहीं भी उथलापन नहीं दिखाई पड़ता, अपितु पूर्ण गम्भीरता का साम्राज्य आपाततः प्रसरित रहता है। प्रो. भट्ट जी विषय और भाषा की गरिमा का कमनीय निदर्शन सुन्दर रीति से प्रस्तुत करने में निपुण हैं और गम्भीर विषयों के प्रतिपादन में अन्यतम हैं। प्रो. भट्ट की 'साहित्यगङ्गाधर' नामक निबन्ध संग्रह ग्रन्थ में पदे–पदे पदलालित्य एवं नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा प्रस्फुटित हुई है। उक्त ग्रन्थ भाषा–सौष्ठव की दृष्टि से समृद्ध और पाठकों के लिए अर्थगाम्भीर्य की दृष्टि से आवर्जक है।

---

[1] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 3

[2] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 3

[3] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 5

[4] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 6

[5] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 7

[6] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 19

[7] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 87

[8] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 92

[9] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 42

[10] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 63

[11] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 119

[12] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 44

[13] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 35

[14] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 101

[15] साहित्यगङ्गाधर पृ.सं. 77

ISSN 2349-638X www.aiirjournal.com